दैनिक जागरण
झाँसी, 16 जनवरी 2017
झाँ

मदद के लिए तैयार हैं ये

मेडिकल कॉलिज
एम.पी. सिंह प्रथम-9415431298
डॉ. शमीम कुरैशी- 9415231674

सरसों की पैदावार डेढ़ गुनी होनी तय

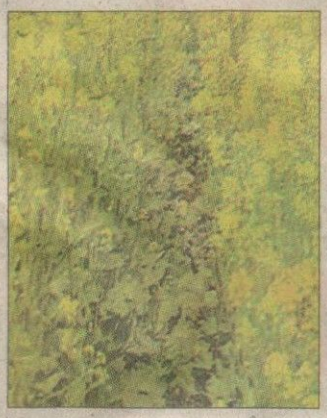

- कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के निरीक्षण में परिणाम अनुरूप पायी गयी फ़सल
- नमी से और अच्छे हो सकते हैं नतीजे
- 40 किसानों को दिये गये थे भरतपुर से मँगाये गये 5 प्रकार के उन्नत बीज

दैनिक जागरण 75 वां वर्ष 1942-2017 विशेष

झाँसी : बुन्देलखण्ड में सरसों की खेती की सम्भावनाओं को देखते हुए कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे प्रयास रंग लाने लगे हैं। सरसों के बीज की उन्नत प्रजातियों से तैयार हो रही फ़सल के निरीक्षण में यह बहुत अच्छी पायी गयी है और पैदावार पहले की तुलना में डेढ़ गुना होनी लगभग तय है। हालाँकि, विश्वविद्यालय इसे दोगुना करने पर काम कर रहा था। इधर, मौसम के कारण आयी नमी इस खेती के अनुकूल है और इससे बढ़ोत्तरी का प्रतिशत और बढ़ सकता है। इस फ़सल के बाद ये बीज अन्य किसानों को भी दिये जाएंगे।

रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा सरसों की पैदावार बढ़ाने के लिए किसानों को आधुनिक ढंग से व उन्नत प्रजाति के बीजों से खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी के तहत सरसों के बीज की 5 उन्नत प्रजातियाँ भरतपुर (राजस्थान) से मँगायी गयी थीं, जो कंचनपुरा व आसपास के गाँवों के 40 किसानों को दिये गये थे। प्रयोग में ये बीज तुलनात्मक दृष्टि से पैदावार दोगुनी करने वाले सिद्ध हुए थे। वैज्ञानिक इनसे होने वाली खेती पर पूरी नज़र बनाये हुए हैं। बताया जा रहा है कि लैब से बाहर इस प्रयोग का सफल होना बहुत बड़ी उपलब्धि होगा। हाल ही में वैज्ञानिकों ने इन फ़सलों का निरीक्षण किया, तो फ़सल परिणाम की चाह के अनुरूप ही मिली। इससे यह तय हो चला है कि पैदावार बढ़कर डेढ़ गुनी तो होगी ही, पर मौसम बदलने से आयी नमी सरसों के लिए वरदान साबित होगी, ऐसे में दोगुने परिणाम तक भी पहुँचा जा सकता है। इस फ़सल के बाद जो भी नतीजे आएंगे, उन्हें क्षेत्र के अन्य किसानों को बताया जाएगा और उन्हें भी इन्हीं बीजों से खेती करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। इसके लिए वैज्ञानिक किसानों को जोड़ने का कार्य समानान्तर कर रहे हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि किसान तभी मानते हैं, जब वे बढ़ती पैदावार की खेती अपनी आँखों से नहीं देख लेते।

सरसों की खेती के बारे में खास बातें

बुन्देलखण्ड में सरसों की पैदावार परम्परागत रूप से होती रही है। चूँकि इसकी खेती में बीज कम लगता है, इसलिए इसे फायदे की खेती के तौर पर देखा जाता है। इस खेती के लिए 1 एकड़ पर सिर्फ 1.5 किलो बीज का इस्तेमाल किया जाता है। अभी तक किसान जिन बीजों से खेती करते हैं, उनसे पैदावार 10 से 12 क्विंण्टल प्रति हेक्टेयर होती है। वहीं, नये बीजों से पैदावार 25-30 क्विंण्टल प्रति हेक्टेयर तक होने की उम्मीद है। उल्लेखनीय है कि देश में 68 हज़ार क्विंण्टल सरसों का आयात हो रहा है। कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने यह पाया है कि सरसों की खेती पुराने बीजों से होने के कारण ही इसकी पैदावार बढ़ नहीं पा रही है। यदि इसमें सफलता मिल जाए, तो बुन्देलखण्ड के किसान समृद्ध तो होंगे ही, आयात में भी कमी लायी जा सकती है।